IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

वैदिक संस्कृत और वेद का महत्व

डॉ. नीरज कुमार
सहायक प्रध्यापक साहित्य
कल्याणी मिथिला संस्कृत महाविद्यालय दीप
मधुबनी, बिहार
Email – neerajkumarbehat@gmail.com
https://doi.org/10.5281/zenodo.19407355

सारांष :– वेद शब्द का अर्थ ''विद्यते ज्ञायते अनेनेति वेदः'' अर्थात् जिसके द्वारा काई ज्ञान प्राप्त किया जाए वही वेद है। भारतीय धर्म और अध्यात्म की जड़े वेदो में ही है :– **(वेदोअखिलो धममूलम, मनुस्मृति 2/6)** वेद प्राचीन भारतीय ऋषियो के आध्यात्मिक अनुभवो और ज्ञान का संग्रह है, ज्ञानार्थक 'विद्' घातु से निष्पन्न 'वेद' शब्द का अर्थ ''ज्ञान'' है। वेदो में पाये गए ज्ञान और सिद्धांतो को भारतीय धर्म के मूल तत्व माना जाता है, जैसे कि ब्रम्ह्म, आत्मा, कर्म, पुनर्जन्म मोक्ष आदि। ये सभी सिद्वांत भारतीय धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों और मतो में पाए जाते है। इसिलिए, वेदो को भारतीय धर्म का मूल–बीज माना जाता है, क्योंकि वे भारतीय धर्म के मूल सिद्वांतो और ज्ञान का स्त्रोत है। वेद संस्कृत साहित्य की नींव है और मानवता के लिए ज्ञान का खजाना है। **''(सर्वज्ञानमयो हि सः मनु0 2/7)''** हिन्दु धर्म के सबसे पुराने और पवित्र ग्रंथ है।

प्रस्तावना :–

जिनमें सदियों से पूजनीय ज्ञान और अंतर्दृष्टि है। वेद आध्यात्मिक, दिव्य और भौतिक उत्कृष्टता के षिखर का प्रतिनिधित्व करते है, जो ब्रम्हाण्ड और मानव अस्तित्व की गहन समझ प्रदान करते है। वेद दर्षन, विज्ञान, धर्म, नैतिकता और सभी प्रकार के ज्ञान से परिपुर्ण माना जाता है। वेद एक सार्थक और उदेष्यपूर्ण जीवन जीने के लिए एक व्यापक मार्गदर्षक है, जिसमें आध्यात्मिक, नैतिकता और व्यक्तिगत विकास पर मार्गदर्षन प्रदान करते है। जगत् के प्राचीनतम् साहित्य के रूप में आदि–संस्कृति के ज्ञान का स्त्रोत है। सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य वैदिक साहित्य के आधार पर बनाया गया है, जिसमें उपनिष्द, पुराण, महाकाव्य और बहुत कुछ शामिल है। वेदों का भारतीय संस्कृति, दर्षन और आध्यात्मिक्ता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जिससे देष की बौद्धिक और अध्यात्मिक विरासत को आकार दिया है, मानवता के लिए वेदो का महत्व बहुत अधिक है, जो संस्कृत साहित्य की नींव बनाते है। ये दुनिया भर के लोगों को प्रेरित और प्रभावित करते रहते हैं, और कालातीत ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्रदान करते है, जो आज भी प्रासंगिक है। वैदिक संस्कृत को अनेकानेक नामो से अभिहित किया गया है, जैसे वैदिकी, वैदिक छन्दस, छान्दस् अदि। वैदिक साहित्य का सृजन वैदिक संस्कृत में हुआ है, जो इस भाषा की महत्ता को दर्षाता है, इसलिए वैदिक संस्कृत एक महत्वपूर्ण भाषा है, जो प्राचीन भारतीय संस्कृति और धर्म के विकास में महत्वपुर्ण भूमिका निभाति है। वैदिक संस्कृत भाषा में सप्तसिन्धु प्रदेष के लोगों ने अपने विचारों और अनभवों को व्यक्त किया। इस भाषा में धार्मिक और लौकिक दोनो प्रकार के विषयो पर समृद्ध साहित्यिक परंपरा है, जैसे कि वेद, ब्राम्हण आरण्यक और उपनिषद् वैदिक साहित्य समकालीन समाज की प्रवृतियो को समझने में अत्यधिक उपयोगी है, क्योकि इसमें समाज के राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक और धार्मिक जीवन के बारे में जानकारी है, इसलिए वैदिक संस्कृत और वैदिक साहित्य का अध्ययन करने से हमें भारतीय समाज के बारे में गहरी समझ प्राप्त होती है वैदिक साहित्य में अनेकों विषयो पर व्याख्यान उपलब्ध होते है, किन्तु विषेष रूप से प्राचीन भारतीय परंपरा में वेद दो मुख्य भागो में बांटा गया है:–

मन्त्र और ब्राहम्ण **(मन्त्रब्राहम्णयोर्वेदनामद्येयम्।)** मन्त्र वे पवित्र शब्द या वाक्य है जिनका उच्चारण करके पूजा–पाठ, यज्ञ–याज्ञो के तरीकों, नियमों और उनके अर्थो की व्याख्या करता है, इस प्रकार वैदिक वाङ्गय को चार भागो मे वर्गीकृत किया जाता है :–

मन्त्रभाग (संहिता), ब्राम्हण, आरण्यक और उपनिषद

1. **ऋग्वेद (Rigveda)**
2. **यजुर्वेद (Yajurveda)**
3. **सामवेद (Samaveda)**
4. **अर्थववेद (Athravaveda)**

ऋग्वेद (Rigveda) यह सबसे प्राचिन वेद है, जिसमें **1028 सूक्त (मंत्र)** है।

यजुर्वेद (Yajurveda) इसमे यज्ञो और अनुष्ठानो से संबंधित मंत्र और प्रार्थनाए है।

सामवेद (Samaveda) इसमें संगीत और गायन से संबंधित मंत्र और सूक्त है।

अर्थवेवेद (Atharvaveda) इसमें तंत्र–मंत्र, चिकित्सा और दैनिक जीवन से संबंधि मंत्र और मुक्त है।

वैदिक संहिता का महत्व :– वैदिक संहिता वैदिक मंत्रो का संग्रह है, जिसमें वैदिक पदों पर परस्पर अधिकतम परः सन्निकर्षः होता है। पाणिनि ने संहिता का अर्थ परः सन्निकर्षः संहिता **(अष्टाध्यायी)** कहा हैं जिसका अर्थ है कि संहिता में परस्पर सन्धिबद्ध मंत्रो का संकलन होता है।

वैदिक संहिताएँ मुख्यतः चार हैः–

1. **ऋग्वेद संहिता**
2. **यजुर्वेद संहिता**
3. **सामवेद संहिता**
4. **अर्थवेवेद संहिता**

इन संहिताओ में मंत्र पहले विभिन्न ऋषिकुलो में बिखरे हुए थे, जिन्हे संकलित किया गया हैं, और वैज्ञानिक व्यवस्था से एकत्र किया गया। यह संकलन मंत्रो के आविर्भाव–काल के बहुत समय बाद में हुआ, और इसका उद्देष्य विषेष था। वैदिक संहिताएँ वैदिक धर्म और संस्कृत के मूलभूत ग्रन्थ है, जिनमें वैदिक ज्ञान, दर्षन और धर्म के मूल सिद्धांतो का वर्णण है, वैदिक संहिता हिन्दु धर्म का मूल आधार है।

1. ब्राहम्ण :– जो यज्ञ–याज्ञों के विस्तृत विवरण और नियमों की व्याख्या करता है।
2. आरण्यक :– जो वन में रहने वाले साधुओ और महात्माओं के जीवन और उनके धार्मिक अनुष्ठानों की व्याख्या करता है।
3. उपनिषद :– जो वैदिक दर्षन और ज्ञान की गहराई से व्याख्या करता है, और जीवन के अर्थ उद्देष्य को समझने में मदद करता है।

इस प्रकार वैदिक वाङ्गमय को मुख्य चार भागों में बांटा गया है। मंत्र, ब्राम्हण आरण्यक और उपनिषद, वैदिक संस्कृतः ब्राम्हण आरण्यक और उपनिषद की भाषाः वैदिक संस्कृत एक प्राचीन भारतीय आर्य भाषा है, जो वेदों और वैदिक साहित्य की भाषा है।

ब्राहम्ण :– आचार्य शबरस्वामी जी ने ब्राम्हणों की विषय वस्तु वर्णन में दस प्रकार के कार्यो का उल्लेख किया है, यथा हेतुनिर्वचनं निदा प्रषंसा संषयो विधिः ।

परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण–कल्पना।
उपमान दषैते तु विद्ययों ब्राम्हणस्य तु।। (मीमांसासुत्रभाष्य 2:1:33)

ब्राम्हण ग्रंथो में निम्नलिखित 10 विषयो का वर्णन होता है।

1. हेतु विचार निर्वयन :– शब्दो में निहित क्रिया के आधार पर अर्थ–प्रकाषन करना।
2. निदा :– किसी वस्तु या व्यक्ति की निंदा करना।
3. प्रषंस :– किसी वस्तु या व्यक्ति की प्रषंसा करना।
4. संषय :– किसी बात को लेकर संषय या संदेह की स्थिति।
5. विधि :– कर्म की प्रेरणा देने वाले वाक्य।
6. परिक्रिया :– एक व्यक्ति की कथा या इतिहास।
7. पुराकल्प :– प्राचीन कथाएँ या पौराणिक कथाएँ।
8. व्यवधारण :– संन्देह की स्थिति में समुचित निर्णय लेना।
9. उपमान :– समान दुष्टान्त द्वारा विषय को स्पष्ट करना।
10. आरण्यक :– वन में रहने वाले साधुओं के जीवन और उनके धार्मिक अनुष्ठानों की व्याख्या।

आरण्यक :– वैदिक संस्कृत में आरण्यक ग्रंथो का महत्वपूर्ण स्थान है, जो ब्राम्हण ग्रंथो के परिषिष्ट रूप में है, ये ग्रन्थ वानप्रस्थ आश्रम के लोगों के लिए उपादेय है। और दर्षनिक सिद्धांतो का निरूपण करते है। आरण्याकों का प्रतिपाद्य विषय यज्ञो में निहित आध्यात्मिक विषयो का विवेचन है, जिनका लक्ष्य चिन्तन है, न कि कर्मानुष्ठान में प्रवर्तन, वैदिक संस्कृत में आरण्यक ग्रंथो को महत्व इस प्रकार है। :–

- ये ग्रंथ वैदिक ज्ञान और दर्षन के गहरे रहस्यो को प्रकट करते है।
- ये ग्रन्थ वानप्रस्थ आश्रम के लोगों के लिए मार्गदर्षक है, जो जीवन में उच्चतम लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत है।
- ये ग्रंथ वैदिक संस्कृति के मूलभूत सिद्धांतो को स्पष्ट करते है, और वैदिक जीवन शैली को प्रोत्साहित करते है, ये ग्रन्थ वैदिक संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को व्याख्या करते है, और वैदिक ज्ञान को विस्तारित करते है।

ये वेदों के गूढ़ और दार्षनिक पहलुओं पर चर्चा करते है। इनमें वन और जंगल में रहने वाले ऋषियो और साधुओ के अनुभव और ज्ञान का वर्णन है। आरण्यक वैदिक संस्कृत में लिखे गये है, जो इस भाषा की विषेषता और प्रमाणिकता को दर्षाते है, इस प्रकार आरण्यक ग्रन्थ वैदिक संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग है। और वैदिक ज्ञान और दर्षन के गहरे रहस्यों को प्रकट

करते है उपनिषदः व्युत्पत्ति और अर्थ, उपनिषद शब्द की व्युत्पति ''उप'' और ''नि'' उपसर्गो से हुई है, जो सद्–धातु से क्विप प्रत्यय के साथ जुड़कर बना है। इसका अर्थ है, ''निकट बैठना'' या ''आसन होना''। इस शब्द का अर्थ है, कि उपनिषद् वे ग्रंन्थ है जिनमे वैदिक ज्ञान और दर्षन के गूढ़ और गहरे रहस्यों को प्रकट किया गया है, और जो वैदिक संस्कृत के मूलभूत सिद्धांतो को स्पस्ट करते है। इस प्रकार उपनिषद् शब्द का अर्थ है ''वैदिक ज्ञान'' के निकट बैठना या वैदिक ज्ञान के आसन्न होना'' जो उपनिषदो के महत्त्व और स्थान को दर्षाता है। सामान्य रूप से उपनिषद् शब्द का अर्थ होता है ''गुरू'' के समीप बैठकर प्राप्त किया गया ''ज्ञान'' परन्तु सद्–धातु के तीन अर्थ प्राप्त होते है :–

1. विषरण (नाष) :– इस अर्थ में उपनिषद् शब्द का अर्थ है ''अज्ञान का नाष करने वाला ज्ञान''
2. गाति (ज्ञान या प्राप्ति) :– इस अर्थ में उपनिषद शब्द का अर्थ है मोक्ष पप्ति के लिए आवष्यक ज्ञान।
3. अवसादन (षिथिल करना) :– इस अर्थ मे, उपनिषद शब्द का अर्थ है ''माया के बंधनों को षिथिल करने वाला ज्ञान।''

इन अर्थो से स्पष्ट होता है कि उपनिष्द् शब्द का अर्थ केवल गुरू के समीप बैठकर प्राप्त किया गया ज्ञान नहीं है, बल्कि या एक गहरा और आध्यात्मिक अर्थ रखता है, जो मोक्ष प्राप्ति और अज्ञान के नाष से संबंधित है। :– उपनिषादयति सर्वानर्थकर संसार विनाषयति, ''संसार– कारणभूतामविद्यां च षिथिलयति ब्रह्म च गमयति'' ।

- ब्रम्हत – ईष्वर परमात्मा या सर्वेच्च सत्ता के स्वरूप और स्वभाव का विवेचना है।
- सृष्टि – सृष्टि की उत्पत्ति स्वभाव और प्रलय के सिद्धांतो का विवेचना है।
- जीव – जीवात्मा की उत्पत्ति स्वभाव और गति का विवेचना है।
- आत्मा – आत्मा की प्रकृति स्वभाव और मुक्ति के मार्ग का विवेचना है।
- प्राणः – प्राण की उत्पति, स्वभाव और महत्व का विवेचना है।
- पुनर्जन्मः – पुनर्जनम के सिद्धांत, और इसके कारणो का विवेचना है।
- कर्मः कर्म के सिद्धांत इसके प्रभाव और मुक्ति के मार्ग में इसकी भूमिका का विवेचना है।

उपनिषदो में उपदेष की विभिन्न विधियो का प्रयोग किया गया है जैसे कि – प्रतिक रूप में, जैसे कि मांडूक्य उपनिषद में ''ओम'' का प्रतिक रूप में विवेचना होता है।

निष्कर्ष :–

वैदिक संस्कृत भाषा का सबसे प्रचीन रूप है, जिसमें वेद जैसे पवित्र ग्रंन्थ लिखे गऐ है, यह लौकिक संस्कृत से व्याकरण और महत्वपूर्ण भाषाएँ और सांस्कृतिक अन्तर्गत वेदों (ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और संबंधित ग्रंन्थो की रचना इसमें किया गया है। वैदिक संस्कृत भारतीय संस्कृति की सबसे पुरानी परंपरा को दर्षाती है। संस्कृति और उसके बाद के विकास के लिए महत्वपूर्ण कड़ी हैं, जिसमें कई विषेषताएँ है, जो इसे लौकिक संस्कृत से अलग करती है। उसमें संगीतमयता, धार्मिक महत्व जटिल व्याकरण और पुराने स्वरूप में मौजूद ध्वनियों और रूपो की बहुतायता है। संस्कृत का वैदिक संस्कृत रूप एक पवित्र भाषा है, क्योकि इसी रूप में वेद नामक पवित्र ग्रंन्थ की रचना हुई है।

संदर्भ :–

1. मीमांसा सूत्रभाष्य।
2. ऋगवेद।
3. भारतीय संस्कृति परिषीलन ।
4. श्रीमद्भगवद्गीतारहस्य ।
5. समवेद।